बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 46 ● नई दिल्ली ● बुधवार 26 नवम्बर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

एमसीडी ने ग्रेटर कैलाश और पंजाबी बाग श्मशान घाटों में नई पार्किंग सुविधा खोली, देरी पर अधिकारी बर्खास्त

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली में पार्किंग की किल्लत के चलते अक्सर लोगों को परेशान होना पड़ता था, खासकर सार्वजनिक श्मशान घाटों में बड़ी दिक्कत हो जाती थी. इसी को ध्यान में रखते हुए अब दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) ने ग्रेटर कैलाश और पंजाबी बाग स्थित श्मशान घाटों में पार्किंग सुविधाओं को आखिरकार जनता के लिए खोल दिया है. लंबे समय से इन क्षेत्रों में पार्किंग की समस्या से जूझ रहे लोगों को अब इससे बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है. निगम ने न केवल दोनों परियोजनाओं को शुरू कर दिया है, बल्कि देरी के लिए जिम्मेदार अधिकारी पर भी कड़ी कार्रवाई की है. निगम अधिकारियों के मुताबिक अनावश्यक देरी बर्दाश्त से बाहर थी,इसलिए लापरवाह कर्मियों पर कार्रवाई की जाएगी.

दिल्लीवासियों को सीएम रेखा गुप्ता की सौगात, 70 आयुष्मान आरोग्य मंदिर सेंटर का किया उद्घाटन

नई दिल्ली ।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने जानकारी दी कि इन आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में नियमित स्वास्थ्य जांच, डॉक्टर परामर्श, आवश्यक दवाइयां, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएं, टीकाकरण, प्रिवेंटिव हेल्थकेयर, सर्वाइकल कैंसर की स्क्रीनिंग और टीकाकरण जैसी सुविधाएं मुफ्त उपलब्ध हैं. उन्होंने बताया कि आयुष्मान भारत योजना, जन औषधि केंद्र, वय वंदना योजना और आयुष्मान आरोग्य मंदिर मिलकर दिल्ली में एक ऐसी स्वास्थ्य प्रणाली का निर्माण कर रहे हैं, जहां बेहतर इलाज हर किसी का अधिकार है, दवाइयां किफायती हैं और आधुनिक सुविधाएं हर नागरिक की पहुंच में हैं.

पिछली सरकार पर निशाना, बदली दिल्ली की सूरत

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इन 10 महीनों में, हमने दिल्ली की सूरत बदलने की कोशिश की है. मैं कई बार इस इलाके में आई और सिर्फ टूटी हुई सड़कें देखीं. इतने सालों में इतने लंबे समय तक सरकार में रहने के बावजूद पिछली सरकारों में बहुत कम काम हुआ. सालों तक शहर को इसी हालत में छोड़ दिया गया.

मोहल्ला क्लीनिक मॉडल पर सवाल

उन्होंने जनता से पूछा,पिछले 10-11 सालों में, क्या आपके पिछले विधायक कभी आपके बीच ऐसे आए थे? क्या उन्होंने कभी ऐसे कदम उठाए? मोहल्ला क्लीनिक को लेकर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा,सालों तक पिछली सरकारों ने मोहल्ला क्लीनिक के आइडिया को बढ़ावा दिया, लेकिन असल में कितने लोग इन क्लीनिक में गए और उन्हें देखा? उन्होंने बस बड़े हॉल या सड़कों के किनारे प्रोपेगैंडा पोस्टर लगाए, जिन पर उनकी बड़ी तस्वीरें लगी थीं. उन बड़ी तस्वीरों के पीछे बहुत कम काम था. दवा, डॉक्टर और कोई स्टाफ नहीं था. आज, एक आरोग्य मंदिर के अंदर कदम रखें और खुद देखें. हर एक आरोग्य मंदिर आपके प्राइमरी हॉस्पिटल की तरह काम करता है.

भीमराव आंबेडकर-संविधान पर क्रूर हमले में जुटा आरएसएस, कांग्रेस का वार

नई दिल्ली । कांग्रेस ने बाबासाहेब आंबेडकर और संविधान का नाम लेते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर हमला बोला है। पार्टी के नेता जयराम रमेश ने मंगलवार को कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने आज ही के दिन 76 साल पहले संविधान सभा में भारत के मसौदा संविधान को औपचारिक रूप से अपनाने का प्रस्ताव रखा था, और उसी समय से उन पर और संविधान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की ओर से क्रूर हमले किए जाते रहे हैं। कांग्रेस के महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने याद दिलाते हुए कहा कि इस प्रस्ताव को पेश करने से पहले अपने समापन भाषण में डॉ. आंबेडकर ने संविधान निर्माण में कांग्रेस की भूमिका की सराहना की थी। रमेश ने एक्स पर लिखा,ठीक 76 साल पहले, डॉ. आंबेडकर ने भारत के मसौदा संविधान को स्वीकार करने का प्रस्ताव संविधान सभा में रखा था। उस अवसर पर उनका समापन भाषण निस्संदेह 20वीं सदी में कहीं भी किसी भी ओर से दिए गए सर्वश्रेष्ठ भाषणों में से एक है। रमेश ने आंबेडकर के भाषण को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने कांग्रेस की अनुशासनात्मक भूमिका को संविधान मसौदा समिति के सुचारू संचालन के लिए बेहद जरूरी बताया था। आंबेडकर के मुताबिक, अगर संविधान सभा में कांग्रेस न होती तो मसौदा समिति का कार्य बेहद कठिन हो जाता और अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो सकती थी। कांग्रेस की उपस्थिति ने समिति को यह सुनिश्चितता दी कि प्रत्येक अनुच्छेद और संशोधन का क्या परिणाम होगा। रमेश ने कहा, डॉ. आंबेडकर और वह संविधान, जिसे अगले दिन औपचारिक रूप से अपनाया जाना था, आरएसएस के भीषण हमलों का शिकार हुए। उन्होंने कहा कि यह हमला तब से लगातार जारी है। उन्होंने यह भी कहा कि 2015 से संविधान दिवस 26 नवंबर को इसलिए मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन 1949 को संविधान सभा ने भारत के संविधान को अपनाया था।

प्रदर्शन के दौरान पुलिस पर छिड़का पेपर स्प्रे, 17 आरोपियो को 3 दिन की यूडिशल कस्टडी

नई दिल्ली । दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने इंडिया गेट पर वायु प्रदूषण के विरोध में हुए प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर पेपर स्प्रे का इस्तेमाल करने के आरोप में गिरफ्तार 11 महिलाओं समेत 17 आरोपियों को तीन दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। अदालत ने पांच अन्य आरोपियों को भी दो दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। न्यायिक मजिस्ट्रेट अरिदमन सिंह चीमा ने एक व्यक्ति को उसकी उम्र की पुष्टि होने तक पर्यवेक्षण गृह भेज दिया है। प्रदर्शनकारियों की वकील वर्तिका मणि ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया कि हमें एक मामले में दो दिन और दूसरे मामले में तीन दिन की न्यायिक हिरासत मिली है। हमने खुद हालात देखे हैं। प्रदर्शनकारी घायल थे; लड़कियों के कपड़े फटे हुए थे और प्रदर्शन कर रहे लोगों की हालत बहुत खराब थी। उन्होंने आगे कहा कि वकीलों को भी उनसे मिलने नहीं दिया गया, जो बिल्कुल गलत है। आप गिरफ्तारी के कारणों का खुलासा नहीं कर रहे हैं और न ही यह स्पष्ट कर रहे हैं कि उन्हें हिरासत में लिया गया था या औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया था। विरोध प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर मिर्ची स्प्रे का इस्तेमाल करने और माओवादी नेता माड़वी हिड़मा के समर्थन में नारे लगाने के बाद 22 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया, जिसके बाद पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा।हमने उन्हें समझाने की कोशिश की कि आपातकालीन वाहन फंसे हुए हैं और उन्हें स्पष्ट रास्ता चाहिए, लेकिन उन्होंने हटने से इनकार कर दिया। फिर स्थिति हाथापाई में बदल गई और कुछ प्रदर्शनकारियों ने हमारे कर्मियों पर मिर्ची पाउडर फेंक दिया, जो असामान्य और दुर्लभ है। सर्वाधिक वांछित भाकपा (माओवादी) कमांडरों में से एक हिड़मा (51) 18 नवंबर को आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीतारामराजू जिले में एक मुठभेड़ में पांच अन्य लोगों के साथ मारा गया। पुलिस ने बताया कि अब आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है, जिनमें धारा 74 (महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने के इरादे से उस पर हमला या आपराधिक बल का प्रयोग), 115(2) (स्वेच्छा से चोट पहुंचाना), 221 (लोक सेवकों के कर्तव्यों के निर्वहन में बाधा डालना) और 223 (लोक सेवक के वैध आदेश की अवज्ञा) शामिल है।

दिल्ली में हादसा: शाहदरा में गिरा एक मकान, मलबे में दबे चार लोगों को निकाला बाहर; बचाव कार्य जारी

नई दिल्ली । शाहदरा जिले के विवेक विहार स्थित बाला नगर में आज एक बड़ा हादसा हो गया। जहां एक मकान ढह गया। इस दुखद घटना में फिलहाल मलबे से चार लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। जिन्हें तत्काल नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। स्थानीय पुलिस और बचाव दल तुरंत मौके पर पहुंच गए और राहत एवं बचाव कार्य शुरू कर दिया है। घटना के कारणों की जांच की जा रही है। बचाव दल ने युद्ध स्तर पर मलबा हटाने का काम शुरू किया। कड़ी मशक्कत के बाद, मलबे से चार लोगों को बाहर निकाला गया। इन सभी को तत्काल उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया है। उत्तम नगर के हस्तसाल गांव में 10 अक्तूबर दो मंजिला मकान भरभराकर गिर गया था। मकान गिरते ही अफरातफरी मच गई थी। सूचना मिलते ही दमकल, पुलिस, एनडीआरएफ और राहत से जुड़ी अन्य एजेंसियों के कर्मचारी मौके पर पहुंच गए थे। घटना के कुछ देर में बचाव दल ने मलबे से मकान मालिक नीरज की पांच साल की बेटी और पत्नी को बाहर निकालकर अस्पताल में पहुंचाया था।

फांसी घर विवाद मामला, अरविंद केजरीवाल-मनीष सिसोदिया पर दिल्ली विधानसभा ने हाईकोर्ट को दिया ये अपडेट

नई दिल्ली । दिल्ली विधानसभा परिसर में बने फांसी घर के विवाद पर मामला लगातार गर्माता जा रहा है. दिल्ली विधानसभा ने हाईकोर्ट को बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया विशेषाधिकार समिति के सामने पेश नहीं हो रहे हैं. विधानसभा सचिवालय की ओर से कहा गया कि दोनों नेताओं को कई बार समन भेजे गए, लेकिन वे एक बार भी उपस्थित नहीं हुए. अब इस पूरे मामले की अगली सुनवाई 12 दिसंबर को तय की गई है. हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान विधानसभा सचिवालय की तरफ से पेश वकील ने बताया कि केजरीवाल और सिसोदिया हर बार यही कहकर पेश होने से बचते रहे कि उनकी याचिका कोर्ट में लंबित है. सचिवालय ने इस तर्क का विरोध करते हुए कहा कि समिति ने उन्हें सिर्फ जांच में सहयोग करने के लिए बुलाया था, ताकि विधानसभा परिसर में बनाए गए फांसी घर की सच्चाई सामने आ सके. सचिवालय की दलील है कि हाईकोर्ट में याचिका लंबित होने का मतलब यह नहीं है कि नेता समिति के सामने पेश न हों. यह मामला अगस्त 2020 से जुड़ा है, जब आम आदमी पार्टी की सरकार ने विधानसभा परिसर में एक संरचना को ब्रिटिश काल का फांसी घर बताते हुए उद्घाटन किया था. उस समय इसे ऐतिहासिक धरोहर बताकर प्रचारित किया गया. लेकिन बीजेपी का दावा है कि यह फांसी घर नहीं बल्कि एक पुराना टिफिन रूम था, जिसे गलत तरीके से फांसी घर बताकर जनता को गलत जानकारी दी गई. इतना ही नहीं, बीजेपी का आरोप है कि उसके रेनोवेशन पर सरकारी धन का गलत उपयोग किया गया. इसी मुद्दे की जांच के लिए बीजेपी विधायक प्रद्युम्न सिंह की अध्यक्षता में एक विशेषाधिकार समिति बनाई गई है. समिति 13 नवंबर को इस मामले पर आगे की जांच और सत्यापन के लिए बैठक कर चुकी है. दूसरी तरफ केजरीवाल और सिसोदिया ने विशेषाधिकार समिति के समन को ही हाईकोर्ट में चुनौती दी है. उनका कहना है कि समिति की कार्यवाही किसी शिकायत, रिपोर्ट या विशेषाधिकार हनन प्रस्ताव पर आधारित नहीं है. ऐसे में समिति का इस तरह का समन जारी करना अधिकार क्षेत्र से बाहर है. उन्होंने कोर्ट में दलील दी है कि समिति की कार्रवाई उनके संवैधानिक अधिकारों आर्टिकल 14, 19 और 21 का उल्लंघन करती है.

धार्मिक असहिष्णुता के विरुद्ध वैश्विक मानव अधिकार संघर्ष का ऐतिहासिक आधार

वैश्विक स्तरपर 25 नवंबर 2025 को गुरु तेग बहादुर सिंह जी के 350 वें शहीदी दिवस का आयोजन केवल एक धार्मिक श्रद्धांजलि भर नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के इतिहास में उन दुर्लभ उदाहरणों का स्मरण है जहाँ किसीआध्यात्मिक नेता ने अपने धर्म के अनुयायियों के लिए नहीं, बल्कि दूसरे धर्म को धार्मिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान दिया। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे, जिनका जीवन साहस और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। उनका शहीदी दिवस हमें न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा देता है।उनका 350वां शहीदी दिवस इस वर्ष मनाया जा रहा है, और यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे और उन्हें 'हिंद की चादर' के रूप में भी जाना जाता है। उनका बलिदान भारतीय धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे, जिनका जीवन साहस और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। उनका शहीदी दिवस हमें न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा देता है। गुरु तेग बहादुर जी का 350वां शहीदी दिवस इस वर्ष मनाया जा रहा है,और यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे और उन्हें 'हिंद की चादर' के रूप में भी जाना जाता है। उनका बलिदान भारतीय धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यह घटना विश्व मानवाधिकार इतिहास में अद्वितीय है।17वीं शताब्दी में मुगल शासन के दौरान जब धार्मिक दबाव और जबरन धर्मांतरण की नीति ने भय और आतंक का वातावरण बना दिया था, उस समय कश्मीर के पंडितों ने अपनी अस्तित्वगत पहचान और धार्मिक स्वाधीनता की रक्षा हेतु सहायता की गुहार लगाई। ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर सिंह जी ने अपनी जान की बाज़ी लगाकर न केवल उन्हें संरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया, बल्कि यह संदेश दिया कि मानवता का धर्म किसी भी धार्मिक सत्ता से बड़ा है।उनका दिल्ली के चांदनी चौक में सार्वजनिक रूप से शहीद होना केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि विचारों की वह निर्णायक जीत थी जिसने यह स्थापित किया कि सत्ता किसी व्यक्ति की आस्था, पहचान और स्वतंत्र विचार पर नियंत्रण नहीं कर सकती। विश्व मानवाधिकार घोषणापत्र (यूडीएचआर 1948) में धार्मिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विचार की स्वायत्तता के जो सिद्धांत शामिल किए गए, वे गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान से सदियों पहले ही व्यवहार रूप में स्थापित हो चुके थे। यही कारण है कि कई अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता और इतिहासकार उन्हें द फर्स्ट ह्यूमन राइट्स डिफेंडर ऑफ द मॉडर्न वर्ल्ड तथा द सैंट ऑफ फ्रीडम ऑफ कंसाइंस के रूप में स्वीकारते हैंगुरु तेग बहादुर सिंह जी का यह शहादत संदेश केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समय के साथ यह वैश्विक मानवाधिकार आंदोलन की आधारशिला बन गया। यह बलिदान यह दर्शाता है कि धार्मिक स्वतंत्रता सिर्फ व्यक्तिगत अधिकार नहीं, बल्कि मानव सभ्यता का मौलिक मूल्य है। उनका बलिदान धार्मिक पहचान की रक्षा नहीं, बल्कि मानव गरिमा की रक्षा थी,और यही उन्हें विश्व इतिहास में अद्वितीय बनाता है।साथियों बात अगर हम शांति सहअस्तित्व और वैश्विक मानवता का संदेश - अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में गुरु तेग बहादुर की विरासत इसको समझने की करें तो, आधुनिक वैश्विक परिवेश में जब दुनियाँ धार्मिक संघर्षों, नस्लीय विभाजन, सांस्कृतिक असहिष्णुता और अतिवाद की चुनौतियों से जूझ रही है, तब गुरु तेग बहादुर सिंह जी का जीवन संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। उनका दर्शन इस विचार को मजबूत करता है कि धर्म का उद्देश्य विभाजन नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और समाज में शांति स्थापित करना है। उन्होंने समाज के हाशिये पर खड़े लोगों, दलितों, पीड़ितों, किसानों और उत्पीड़ित समुदायों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उनके शिक्षण में मनुष्य की समानता, करुणा, निडरता और त्याग के आदर्श स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आज इंटरफेथ डायलाग पीसफुल कोएक्सीस्टेंस और रिलिजस टॉलरेंस जैसे विषयों पर चर्चा बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न वैश्विक संस्थाएँ शांति और मानवाधिकारों के विस्तार के लिए प्रयास कर रही है। ऐसे वैश्विक विमर्श में गुरु तेग बहादुर सिंह जी की विचारधारा एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करती है। वे बताते है कि धार्मिक विविधता संघर्ष का कारण नहीं बल्कि मानव संस्कृति की समृद्धि का प्रतीक है।उनकी शिक्षाएँ अहिंसा और आत्मसंयम के माध्यम से संघर्षों के समाधान की ओर प्रेरित करती है। उन्होंने सिख परंपरा में सरबत दा भला अर्थात् सभी का कल्याण का सिद्धांत मजबूत किया, जो आज संयुक्त राष्ट्र के ग्लोबल पीस एंड वेलफेयर मिशन से गहरे रूप में जुड़ता है।

गुरु तेग बहादुर सिंह जी के दर्शन में राष्ट्र, धर्म, जाति और समुदाय से ऊपर उठकर मानवता को प्राथमिकता देने का संदेश है, जो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सामुदायिक हिंसा, धार्मिक ध्रुवीकरण और युद्ध की स्थितियों से जूझ रही दुनिया के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकता है।उनकी न्यायिक विरासत आज कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और एशिया के अनेक देशों में अध्ययन और अनुसंधान का विषय है। विश्वभर में सिख समुदाय और मानवाधिकार संगठन उनके बलिदान को फ्रीडम ऑफ फेथ और लिबर्टी ऑफ कोनसाइंस के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्मृति में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, अकादमिक परिसंवादों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन यह दर्शाता है कि उनकी विरासत वैश्विक समाज में आज भी जीवंत और प्रभावशाली है। साथियों बात अगर हम 350 वें शहीदी वर्ष (2025) का वैश्विक महत्व अंतरराष्ट्रीय संवाद, मानवाधिकार एजेंडा और विश्व समुदाय की भूमिका इसको समझने की करें तो गुरु तेग बहादुर सिंह जी के 350वें शहीदी वर्ष 2025 का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाना ऐतिहासिक,सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अवसर दुनिया को यह पुनः स्मरण कराता है कि धार्मिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष केवल कानूनी या राजनीतिक प्रश्न नहीं, बल्कि मानवीय मूल्य है जिनके लिए इतिहास में कई महान व्यक्तियों ने अपना जीवन समर्पित किया। आज भी विश्व के अनेक क्षेत्रों,मध्य पूर्व, अफ्रीका, एशिया और यूरोपमें धार्मिक असहिष्णुता, अल्पसंख्यक उत्पीड़न ,नस्लीय हिंसा और विचारों पर नियंत्रण की घटनाएँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान वैश्विक समुदाय के लिए प्रेरणा और चेतावनी दोनों है।2025 में इस अवसर पर यदि वैश्विक नेतृत्व उनकी विरासत को मानवाधिकार नीतियों, धार्मिक स्वतंत्रता संरक्षण, शांति निर्माण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के ढांचे में शामिल करे, तो यह विश्व व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह चर्चा महत्वपूर्ण होगी कि क्या दुनियाँ वास्तव मेंआस्था की स्वतंत्रता को सार्वभौमिक अधिकार के रूप में स्वीकारती है, या अभी भी राजनीतिक स्वार्थ, सत्ता और विचारधारा के दबाव के आगे मानव अधिकार कमजोर पड़ जाते है। साथियों बात अगर हम गुरु तेग बहादुर सिंह जी का शहीदी दिवस अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संदेश देने की करें तो,यह अवसर देता है कि वे धार्मिक स्वतंत्रता को केवल दस्तावेजों में नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करें। शैक्षणिक संस्थानों में उनकी विचारधारा पर शोध, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों द्वारा उनके योगदान को मान्यता,और वैश्विक शांति अभियानों में उनके सिद्धांतों को शामिल करना इस वर्ष की प्रमुख उपलब्धियाँ हो सकती हैं।उनका बलिदान यह सिद्ध करता है कि एक व्यक्ति का साहस और नैतिक दृढ़ता इतिहास की दिशा बदल सकता है। यह संदेश आज की पीढ़ी को यह प्रेरणा देता है कि अन्याय, उत्पीड़न और असहिष्णुता के विरुद्ध आवाज उठाना केवल अधिकार नहीं, बल्कि मानवता के प्रति जिम्मेदारी है। विश्व समुदाय यदि इस ऐतिहासिक अवसर का उपयोग मानव मूल्यों को सुदृढ़ करने में करता है, तो यह 350वाँ वर्ष केवल स्मरण नहीं, बल्कि एक वैश्विक परिवर्तन का आधार बन सकता है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि गुरु तेग बहादुर सिंह जी का 350वाँ शहीदी दिवस केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि वैश्विक मानवाधिकार इतिहास की महत्वपूर्ण धरोहर का उत्सव है।

सम्पादकीय...

सिंध हमारा है

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह विषधर पाकिस्तान की भाषा और उसके बाद डसने के दुस्साहस से परिचित हैं। अनुभवी राजनीतिज्ञ के तौर पर उन्होंने पाकिस्तान पर उसी लहजे में वार किया है जिस लहजे में उसके सियासतदान बात करते हैं। रक्षामंत्री ने पाकिस्तान पर यह कहकर जबरदस्त प्रहार किया कि बॉर्डर कभी भी बदल सकते हैं और उसका सिंध प्रांत फिर से भारत में आ सकता है। इससे पहले अक्तूबर माह में सरक्रीक के क्षेत्र में पाकिस्तान की बढ़ती सैन्य गतिविधियों और बुनियादी ढांचे के निर्माण पर सीधी चेतावनी दी थी कि अगर पाकिस्तान कोई गलत हरकत करता है तो उसे याद रखना चाहिए कि कराची का रास्ता सरक्रीक से होकर गुजरता है। सरक्रीक भारत और पाकिस्तान के बीच गुजरात के कच्छ क्षेत्र और सिंध प्रांत के बीच 96 किलोमीटर लंबी खाड़ी जो अरब सागर में जाकर मिलती है। राजनाथ सिंह ने सिंधी समाज के योगदान का महत्व और सिंध के साथ जुड़ाव को बताते हुए कहा कि भले ही आज सिंध भौगोलिक रूप से भारत का हिस्सा नहीं है लेकिन सभ्यतागत रूप से यह हमेशा भारत का अभिन्न अंग रहेगा। जहां तक भूमि का प्रश्न है सीमाएं बदल सकती हैं। सिंध के हमारे लोग जो सिंधु नदी को पवित्र मानते हैं, हमेशा हमारे अपने रहेंगे। रक्षा मंत्री के बयान पर पाकिस्तान तिलमिला उठा है। क्योंकि वह वास्तविकता जनता है कि उसके भीतर के हालात ऐसे है कि वह कभी भी खंड-खंड हो सकता है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, बलूचिस्तान, खैबर पख्तून और सिंध में पहले से ही आजादी की मांग उठ रही है। कहीं पाकिस्तान टूट गया तो वह उत्तर प्रदेश से भी छोटा देश बन जाएगा। सिंध के वर्तमान हालात से पहले इसके इतिहास को जानना बेहद जरूरी है। ये तब की बात है जब दुनिया ऐसे अदृश्य लकीरों में नहीं बटी थी। तब एक देश से दूसरे देश जाने के लिए वीजा नहीं लगता था। उस वक्त भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। महीनों की पैदल यात्रा के बाद जब कोई यात्री हिंदुकुश पार करके इस ओर आता था तब उसे सिंधु नदी नजर आती थी। सिंधु नदी का जिक्र ऋग्वेद में भी आता है। प्रोटो-ईरानिक भाषाओं में सिंधु को हिंदु कहा जाता था और इस तरह हिंदु के पार बसी जगह हिंदुस्तान हो गई। ईरान के पार ग्रीक में लोग इसे इंडोस और रोम के लोग इंडस कहने लगे और इस तरह इंडस के पार बसे लोगों को 'पीपल ऑफ द इंडस' यानी, इंडिका कहा जाता था जो अब इंडिया कहलाता है। अब इस ऐतिहासिक इलाके के राजनीतिक परिदृश्य को समझते हैं। सिंधु नदी के साथ सटा इलाका सिंध कहलाता है और 1947 में हुए भारत-पाक बंटवारे के बाद ये जगह पाकिस्तान में चली गई। ये इलाका पाकिस्तान के चार प्रांतों में से एक बन गया। बंटवारे के बाद कई सारे सिंधी लोग बचकर भारत आ गए और यहां से कई मुसलमान सिंध में जाकर बस गए जिससे सिंध की आबादी का बैलेंस बिगड़ गया और वहां के मूल बाशिंदे कम हो गए। मूल सिंधियों ने पाकिस्तान को कभी दिल से नहीं अपनाया। इसी के चलते वो मांग करते हैं अलग 'सिंधुदेश' की। यानी अलग सिंध देश की जो पाकिस्तान से बिल्कुल अलग हो। सिंध में अलग सिंधु देश बनाने की मांग ने तब जोर पकड़ा जब 1967 में पाकिस्तान ने उन पर उर्दू भाषा थोप दी। सिंधियों के लिए सिंध महज एक प्रांत नहीं, बल्कि उनकी पहचान का एक बड़ा हिस्सा है। उन्हें लगता है कि पाकिस्तान में उनकी पहचान सुरक्षित नहीं। पाकिस्तान के हुकमरानों ने सिंध में हमेशा ही अत्याचार ढाए हैं। सिंध से हिन्दू समुदाय की लड़कियों का अपहरण और जबरन इस्लाम में धर्मांतरण करके मुस्लिमों से निकाह कराने की खबरें आती रही हैं। हिन्दू मंदिरों में तोड़फोड़ और लूटपाट की खबरें भी मिलती रही हैं। सिंधियों की आवाज को दबाने के लिए पाकिस्तान की सरकारें और सेना हमेशा ही जुल्म करती आई है। हजारों सिंधी ऐसे हैं जिनका आज तक पता नहीं चला। अपनी आवाज बुलंद करने वालों को रातों-रात गायब करवा दिया जाता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे बलूचिस्तान में सालों से चल रहा है। सिंध के लोगों ने मानवाधिकारों को लगातार कुचले जाने के विरोध में दुनियाभर में आवाज उठाई है। सिंध ने पाकिस्तान को दो प्रधानमंत्री दिए हैं। जुल्फीकार अली भुट्टो और उनकी बेटी बेनजीर भुट्टो। उनके रहते सिंधियों का संघर्ष कुछ धीमा जरूर पड़ा लेकिन बाकी हुकमरानों के सत्ता में रहते विद्रोह हमेशा तेज रहा। सिंधियों ने भारत से यह गुहार भी लगाई थी कि जैसे कश्मीरियों को 370 से आजादी दिलाई उसी तरह उन्हें भी आजादी दिलाई जाए। सिंध का पूरा इलाका सम्पदाओं से भरपूर है। हर फसल की खेतीबाड़ी, जड़ी-बूटियां, प्राकृतिक औषधियां, ड्राईफ्रूट्स के लिए यह क्षेत्र मशहूर है। यह क्षेत्र पाकिस्तान के दूसरे इलाकों से कहीं ज्यादा सम्पन्न है। यहां की आबोहवा भारत की सभ्यता से एकदम मेल खाती है। कोई जमाना था जब सिंध प्रांत वैदिक सभ्यताओं का हब था लेकिन मुस्लिम कट्टरपंथियों ने इसे खून-खराबे के क्षेत्र में बदल दिया। पाकिस्तान सिंध की सम्पदा का इस्तेमाल तो करता है लेकिन आज तक सिंधियों को अधिकार नहीं दिए गए। सिंध कट्टरपंथियों की दुर्दांत सोच का शिकार सदियों से हो रहा है। बंटवारे के समय भारत से गए मुस्लिमों को भी वहां अपमान झेलना पड़ा। भारत से गए मुस्लमानों को वहां मुहाजिर कहा गया और स्थानीय मुस्लिमों ने उन्हें हमेशा दूसरे दर्जे का नागरिक माना। दशकों तक उन्हें उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान की दुःखती रग पर हाथ रख दिया है और जय सिंध मुत्तहिदा महाज के नेताओं ने उनके बयान का स्वागत करते हुए कहा कि अलग सिंध देश के लिए संघर्ष तेज होगा और अलग सिंधु देश भारत के साथ एक संघीय रिश्ता बना सकता है। इससे स्पष्ट है कि सिंध के लोग भारत से जुड़ना चाहते है।

आतंकवाद के ऐसे व्यापक तंत्र से कैसे निपटें

दिल्ली लाल किला आतंकवादी कार विस्फोट की छानबीन से आ रही जानकारियों ने पूरे देश में भय और सनसनाहट पैदा की हुई है। अभी तक की जानकारियां बता रही हैं कि अगर आतंकवाद का यह मॉड्यूल सफल हो गया होता तो देश में जगह-जगह अनगिनत विस्फोट होते और उसमें होने वाली मानवीय एवं संपत्तियों की क्षति का तो आकलन भी नहीं किया जा सकता। सच कहें तो आतंकवाद के दौर की शुरुआत से अब तक पूरे देश में विध्वंस पैदा करने का यह सबसे बड़ा तंत्र सामने आया है। बताया गया है कि विस्फोट के लिए 32 कारों की व्यवस्था थी जिनमें से कई बरामद हो चुकी हैं। इन कारों के अलावा अलग-अलग तरीकों से भी विस्फोटों की तैयारी थी। उनकी तैयारियों का एक उदाहरण देखिए। कार विस्फोट में आत्मघाती बने उमर उन नबी के जम्मू-कश्मीर अनंतनाग के काजीगुंड के गिरफ्तार साथी जसीर बिलाल वानी उर्फ दानिश से पता चला है कि हमास द्वारा 7 अक्तूबर, 2023 को इसराईल पर किए गए ड्रोन और रॉकेट से हमले की पुनरावृत्ति करने की भी तैयारी थी। उसे छोटे ड्रोन हथियार बनाने और उन्हें मॉडिफाई करने का तकनीकी अनुभव है। उसने डा. उमर को तकनीकी मदद दी और वह भीड़-भाड़ वाले इलाके में ड्रोन से बम गिराने की योजना को साकार करने के लिए ड्रोन और रॉकेट बनाने की कोशिश कर रहा था। विस्फोट में इस्तेमाल कार खरीदने के लिए दिल्ली आया राशिद अली भी जम्मू-कश्मीर का रहने वाला है। वास्तव में अब तक की छानबीन हमें कई पहलुओं पर गंभीरता से विचार करने को भी विवश करती है। अभी तक इस भयानक आतंकवादी मॉड्यूल में 6 ऐसे सम्मिलित डाक्टर गिरफ्तार किए गए हैं जिनका दिमाग चिकित्सा में अच्छा करने की जगह मजहब के नाम पर हमला, हत्या और विध्वंस पैदा करने की दिशा में ही लगा था। इन्होंने अचानक कार विस्फोट नहीं किया बल्कि पहले से कोशिश चल रही थी। 6 दिसंबर को अयोध्या से लेकर अनेक स्थलों पर विस्फोट करने और उसके बाद इसकी श्रृंखला कायम रखने की तैयारी थी। अल-फलाह यूनिवर्सिटी से गिरफ्तार डा. मुजम्मिल गनई के मोबाइल फोन से प्राप्त डंप डाटा से पता चला है कि उसने और उमर ने इस वर्ष जनवरी में लाल किला क्षेत्र की भी कई बार रेकी की थी। यह रेकी गणतंत्र दिवस पर इसको निशाना बनाने की एक बड़ी साजिश का हिस्सा थी। उस समय क्षेत्र में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के कारण ये ऐसा नहीं कर सके। उच्च शिक्षित होने के कारण ये किस तरह हर प्रकार की तकनीक को समझ कर उसका उपयोग कर पाते थे इसका प्रमाण भी देखिए। उमर उन नबी, डा. मुजम्मिल गनई और डा. शहीन शाहिद ने स्विट्जरलैंड के 'थ्रीमा' नाम के एन्क्रिप्टेड ऐप से बातचीत की थी। इसी ऐप के जरिए वे धमाके की योजना, नक्शे सहित आवश्यक दस्तावेज व जानकारियां सांझा कर रहे थे। थ्रीमा ऐप फोन नंबर या ईमेल के बिना काम करता है और हर यूजर को एक यूनीक आई.डी. देता है, जिससे उसका पता लगाना मुश्किल हो जाता है। हम और आप में से कितने लोगों ने थ्रीमा ऐप का नाम सुना है या उपयोग किया है? पता नहीं अभी इसमें और क्या-क्या जानकारियां सामने आएंगी। डाक्टर बनने वाला कोई व्यक्ति छात्र के रूप में थोड़ा मेधावी तो होगा ही। इमरान मसूद जैसे नेता इनको भटका हुआ बता दें या हुसैन दलवाई जैसे मुस्लिम नेता कहें कि चुनाव के पहले ही विस्फोट क्यों होता है, यह कहा जाए कि आप इसको इस्लामी आतंकवाद न कहिए तो क्या उत्तर दिया जा सकता है? पुलिस की छानबीन में उनके पहले किसी अपराधी से संपर्क आदि की भी जानकारी नहीं है। एक डाक्टर को समाज में इज्जत मिलती है और उसकी गतिविधियों पर सहसा संदेह नहीं किया जा सकता। आखिर कानपुर में किसने सोचा होगा कि डाक्टर शहीन शाहिद जैश-ए-मोहम्मद की इतनी बड़ी आतंकवादी होगी और उसके पास ए.के.-47 जैसा हथियार होगा? सामने आया है कि धमाके के लिए 20 से 25 लाख रुपए इकट्ठा करने में उसकी प्रमुख भूमिका थी। इसमें हरियाणा और पंजाब से लेकर दिल्ली, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश तक आसानी से लोग आतंकवादी बन जाते हैं तो इसका कारण समझने के लिए अंतरिक्ष विज्ञानी होना आवश्यक नहीं है। बगैर स्थानीय और परिवार के लोगों के सहयोग के इतना बड़ा तंत्र खड़ा हो ही नहीं सकता। फरीदाबाद के धौज मस्जिद के इमाम इश्तियाक और सिरोही मस्जिद के इमाम इमामुद्दीन अगर आतंकवाद इस्लाम का काम या जिहाद मानकर उनकी मदद कर रहे थे तो क्यों? इन्होंने मिलकर पूरी अल-फलाह यूनिवर्सिटी को ही आतंकवाद के बड़े केंद्र में बदल दिया था।

अधर में लटका हुआ है अमरीका का भविष्य

'**डैमोक्रेट्स** की उधेड़ बुन' डैमोक्रेटिक पार्टी के लिए अपने आंतरिक और बाहरी संघर्षों को दर्ज करने का एक सदाबहार शीर्षक रहा है। लेकिन क्या होगा जब डोनाल्ड ट्रम्प की देशभक्ति और पूर्ण प्रभुत्व के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी का पतन हो जाए? दोनों पक्षों की अव्यवस्था को औद्योगिक स्तर पर सफाई की जरूरत है। लेकिन और भी रिसाव की उम्मीद है। गहरे भू-राजनीतिक उतार-चढ़ाव के दौर में यह आत्मविश्वास जगाने वाला नहीं है लेकिन अमरीकी राजनीति में एक बिल्कुल नए युग की शुरुआत हो सकती है। दोनों दलों की आत्मा की लड़ाई खतरनाक रूप से वास्तविक होती जा रही है क्योंकि सीमांत झगड़े केंद्र में आ रहे हैं। अमरीका का भविष्य अधर में लटका हुआ है। युवा वामपंथी डैमोक्रेट्स पुराने मध्यमार्गियों को चुनौती दे रहे हैं। 2026 के मध्यावधि चुनावों से पहले उन्हें परास्त करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि वर्जीनिया और न्यू जर्सी में मध्यमार्गियों ने गवर्नरशिप जीती लेकिन न्यूयॉर्क मेयर चुनाव में जोहरान ममदानी की जीत ने सबसे ज्यादा चर्चा बटोरी। समाजवादी बड़े शहरों के कॉलेज-शिक्षित उदारवादियों के साथ है। लेकिन क्या वे देश के अन्य 'कम विकसित' हिस्सों में टिक पाएंगे? क्या ममदानी, अलेक्जैंड्रिया ओकासियो-कोर्टेज उर्फ ए.ओ.सी. और उनके गॉडफादर बर्नी सैंडर्स आगे चलकर डैमोक्रेट्स की पहचान बनेंगे? क्या मध्यमार्गी रद्द हो जाएंगे? यह कहना अभी जल्दबाजी होगी। लेकिन आशावादी लोग जोर देकर कहते हैं कि डैमोक्रेट्स 'घटाव का नहीं, जोड़ का खेल' खेल रहे हैं। हर जिला, हर लड़ाई अनोखी होती है और स्थानीय मुद्दों पर ही तय होगी। जितने ज्यादा लोग होंगे, उतना ही अच्छा होगा और तंबू भी बड़ा होगा। नीले रंग की जीत दर्ज होने और जश्न शुरू होने में बमुश्किल ही समय लगा था कि गृहयुद्ध तेज हो गया। पार्टी का एक बड़ा हिस्सा शटडाऊन के 'विश्वासघात' पर गुस्से से भड़क उठा । 7 डैमोक्रेट सीनेटरों ने इसे खत्म करने के लिए रिपब्लिकन के साथ वोट दिया। सरकार को फि र से खोलने के उनके वोट से उन्हें स्वास्थ्य सेवा सबसिडी पर कोई गारंटी नहीं मिली, यही मुख्य कारण था कि डैमोक्रेट्स ने यह रुख अपनाया। इसीलिए गुस्सा और आरोप-प्रत्यारोप दिखे। मीडिया से मिली भारी मदद के बावजूद, ट्रम्प के बहाने काम नहीं आ रहे हैं। 33 प्रतिशत तक गिर चुकी अनुमोदन रेटिंग के साथ, वह जो बाइडेन के 'सीमा नियंत्रण में है' वाले भ्रम के दौर से गुजर रहे हैं। ऐसा लगता है कि वह व्हाइट हाऊस में बॉलरूम और बाथरूम बनवाने, ग्रेट गैट्सबी थीम वाली पार्टियां करने और दुनिया भर में हवाई यात्रा करने में ज्यादा व्यस्त हैं, नोबेल शांति पुरस्कार की उनकी चाहत की तो बात ही छोड़ दीजिए। वह जानते हैं कि उनके नीचे की जमीन हिल रही है, भले ही वह दावा करें कि ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। प्रमुख आवाजें एच.1बी वीजा, इसराईल को सहायता, पूर्व आतंकवादी से सीरियाई राष्ट्रपति बने अहमद अल-शरा को व्हाइट हाऊस में आमंत्रित करने और घरेलू मुद्दों पर विदेश नीति को तरजीह देने के उनके रुझान को लेकर ट्रम्प को चुनौती दे रही हैं।

क्या ढाई साल के सीएम हैं नीतीश?

त्रिदीब रमण

नीतीश कुमार ने पूरे तामझाम के साथ भले ही 10वीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की 'शपथ ले ली हो, पर माना जा रहा है कि उनके स्वास्थ्यगत कारणों को देखते हुए इस बार उनका मुख्यमंत्रीय सफर आधी दूरी ही तय कर पाएगा। विश्वस्त सूत्रों का दावा है कि नीतीश के 'शपथ ग्रहण समारोह से पूर्व जदयू के तीन प्रमुख नेतागण यूं अचानक एक विशेष विमान से दिल्ली पहुंचे, जहां उनकी पहले से ही पीएम मोदी के संग एक अहम बैठक तय थी। यह भी कहा जा रहा है कि जदयू की यह तिकड़ी यानी राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह, संजय झा और कभी नीतीश के सबसे भरोसेमंद नौकरशाहों में 'शुमार होने वाले मनीष वर्मा एयरपोर्ट से सीधे पीएम आवास की ओर रवाना हो गए। जहां इस बात पर सहमति बनी कि इस दफे एनडीए गठबंधन में सबसे बड़ी पार्टी (89 सीट) होने के बावजूद भाजपा नीतीश को मुख्यमंत्री पद की 'शपथ दिलाने को तैयार है, बदले में भाजपा ढाई साल का इंतजार करेगी। ढाई साल के बाद बिहार में भाजपा का अपना मुख्यमंत्री होगा और नीतीश को दिल्ली में किसी बड़े संवैधानिक (राष्ट्रपति या उप राष्ट्रपति) पद पर सुशोभित किया जाएगा। इसके बाद इन जदयू नेताओं ने वहीं से भाजपा के इस प्रस्ताव पर नीतीश से बात की, कहते है नीतीश आसानी से इस फार्मूले पर सहमत हो गए। बिहार के चुनावी नतीजों ने कांग्रेस का सियासी तापमान नई ऊंचाईयों पर पहुंचा दिया है। 14 नवंबर को जैसे ही बिहार की चुनावी तस्वीर साफ होने लगी, हैरान-परेशान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोनिया गांधी को फोन कर बड़ी हार के कारणों पर चर्चा की तथा परिणाम पर हैरानी भी जताई। उन्होंने इंदिरा जी के जमाने से जुड़ा होने की बात कही व साथ ही 15 मिनट भर का समय न मिलने का तकाजा भी किया। उन्होंने कहा ?कि बिहार में जब हमारा कैम्पेन शुरू हुआ तो मेरा 'शुरू से यही मानना था कि तेजस्वी को 'कांफिडेंस' में लेकर यह 'शुरू करना चाहिए, पर ऐसा नहीं हो पाया। राजद से हमारा तनाव बढ़ता रहा। चुनाव की तारीखें जब एकदम करीब आ गईं तो लोगों को भी पता चलने लगा कि कांग्रेस राजद के रिश्तों में खटास आ चुकी है तथा टिकट वितरण में देरी से माहौल खराब हो गया है। इसके साथ ही उन्होंने कर्नाटक से जुड़े रहे अल्लावरू के बारे में बिहार भेजे जाने के मामले पर सवाल भी खड़े किए। उन्होंने कहा कि अल्लावरू भी उनके गृह क्षेत्र के ही रहने वाले हैं। खड़गे ने कहा कि अल्लावरू को बिहार का प्रभारी बनाने से पहले मुझसे एक बार भी नहीं पूछा गया अल्लावरू ने लालू परिवार के साथ कांग्रेस के रिश्ते बदतर किए, उन पर टिकट बेचने के आरोप लगे, पटना एयरपोर्ट पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा वे खदेड़े गए। इसके बाद खड़गे ने पप्पू यादव को कांग्रेस मुख्यालय से पैसा (कैंडीडेट्स के लिए) भेजने तथा उम्मीदवारों को न मिलने और इसकी तहकीकात न होने का उल्लेख भी किया। बिहार विधानसभा चुनाव में बंपर जीत हासिल करने के बाद भी भाजपा का हारी हुई सीटों पर मंथन जारी है। वह भी ऐसी सूरत में जब इस चुनाव में पार्टी की जीत का स्ट्राइक रेट लगभग 90 फीसदी की रिकार्ड ऊंचाई पर पहुंच गया है। पार्टी से जुड़े सूत्र खुलासा करते है कि सीमांचल की कुछ सीटों पर पार्टी भीतरघात की शिकार हो गई है, संघ की भी इस मामले में कमोबेश यही राय है। पार्टी रणनीतिकारों को लग रहा है कि सीमांचल की कुछ सीटें ऐसी भी हैं जहां पार्टी अपने कैडर अपने गठबंधन साथी जदयू को ट्रांसफर नहीं करा पाई। इस कड़ी में प्रमुखता से अररिया संसदीय क्षेत्र को निशाने पर लिया गया है। अररिया से भाजपा सांसद प्रदीप सिंह अति पिछड़ी जाति 'गंगई' से ताल्लुक रखते है, रिपोर्ट है कि इस संसदीय सीट के अंतर्गत आने वाली कुछ सीटों पर प्रदीप सिंह अपने पसंदीदा लोगों को टिकट नहीं दिलवा पाए, मिसाल के तौर पर फारबिसगंज विधानसभा सीट का नाम लिया जा सकता है। जहां हिंदु-मुस्लिम ध्रुवीकरण के बावजूद भगवा पार्टी लंबे समय तक यहां अपराजेय रही थी, यहां से सांसद अपने खास मित्र (जिन्हें उनका व्यापारिक साझेदार भी माना जाता है) को टिकट दिलवाना चाहते थे, पर पार्टी ने यहां से अपने दो बार के जीते विधायक विद्यासागर केसरी को रिपीट कर दिया। नतीजतन न तो सांसद महोदय केसरी के नामांकन में पहुंचे और ना ही इनके चुनाव प्रचार में ही कोई । बिहार चुनाव के हालिया नतीजों के बाद इंडिया गठबंधन की राजनीति में भी घोर उथल-पुथल का दौर 'शुरू हो चुका है। नतीजे आने के तुरंत बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन से सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव से एक लंबी बात की। आने वाले कुछ महीनों में (अप्रैल मई 26) तमिलनाडु में भी विधानसभा चुनाव होने है, सो स्टालिन चाहते थे कि अखिलेश चुनाव प्रचार के लिए तमिलनाडु भी आएं क्योंकि राज्य में उत्तर भारतीयों की एक बड़ी तादाद है और इस बिहार चुनाव में भी अखिलेश ने वहां जितनी चुनावी सभाएं की उनमें लोगों की अच्छी-खासी भीड़ जुटी। स्टालिन अपनी बातचीत में राहुल गांधी और कांग्रेस को लेकर भी बेहद गंभीर दिखे। उनका मानना था कि राहुल गांधी ने बिहार में जितनी मेहनत की वह वोटों में तब्दील नहीं हो पायी। स्टालिन को इस बात की भी चिंता थी कि मुस्लिम वोटरों का भी बिहार में कांग्रेस से मोहभंग हुआ और वे ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम की ओर चले गए। यहां न सिर्फ ओवैसी के 5 लोग जीत गए, बल्कि 9 सीटों पर उनके उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे। कहते हैं स्टालिन ने अखिलेश से कहा कि तमिलनाडु चुनाव में उनका कांग्रेस के साथ गठबंधन बरकरार रहेगा, पर उन्होंने अपने कैडर से कह दिया है कि वे चुनाव में कांग्रेस पर ज्यादा निर्भरता ना रखें।

अखिलेश ने भी स्टालिन के समक्ष स्पष्ट किया कि कांग्रेस को लेकर वे भी उलझन में हैं। हालिया बिहार चुनाव में कांग्रेस का स्ट्राईक रेट मात्र 10 फीसदी के आसपास है, जो । प्रधानमंत्री मोदी पहले ही कांग्रेस में एक बड़ी टूट की भविष्यवाणी कर चुके हैं। इस वक्त मुख्यधारा की कांग्रेसी राजनीति में घोर उथल-पुथल का दौर जारी है। इसकी धमक कांग्रेस 'शासित राज्यों में भी सुनी जा सकती है। बताया जा रहा है कि कर्नाटक में एक बार फिर से वहां के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उनके डिप्टी डीके शिवकुमार आमने-सामने आ गए हैं। लगता है ढाई-ढाई साल के राज का फार्मूला सिद्धारमैया ने ठुकरा दिया है। अब वे खम्म ठोक कर कह रहे हैं कि वे अपने पांच साल के कार्यकाल को पूरा करेंगे। वहीं डीके ने भी दिल्ली को यह कह कर चौंका दिया है कि कर्नाटक के सभी 140 विधायक मेरे विधायक हैं, किसी तरह का ग्रुप बनाना उनके खून में नहीं। वहीं दिल्ली में जब बिहार की हार को लेकर मंथन बैठक चल रही थी तो दिग्गी राजा ने मुकुल वासनिक को आड़े हाथों लेते हुए कहा-'आपको क्या पता ग्राउंड रियल्टी? आपको तो यह भी नहीं पता होगा कि बीएलओ क्या होता है?' कांग्रेस में राहुल के कुछ खास दुलारे नेताओं मसलन, केसी वेणुगोपाल या अजय माकन पर भी सीनियर नेताओं का तंज जारी है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने वन्दना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पैण्डवनगर एक्स, दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/35862)

शहर के 101 मंदिरों पर किया सुन्दर काण्ड पाठ

मुरादाबाद।

राष्ट्रीय पुजारी परिषद के आह्वान पर प्रभु श्री राम जन्मभूमि अयोध्या में भव्य, दिव्य अद्भुत स्वर्णिम छटा बिखेरता श्री राम मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी द्वारा धर्म ध्वजा पुर्नस्थापना कर देश का गौरव और सम्मान को शिखर पहुंचा है देश के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ है । राष्ट्र के गौरवशाली दिन को यादगार बना ने के लिए शहर के 101 मंदिरों पर सुन्दर काण्ड पाठ ,सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ, महाआरती एवं दीपोत्सवआदि कार्यक्रम शहर के अनेक मंदिरों पर भव्यता के साथ आयोजित कर सनातन धर्म में नया उत्साह भरा। प्रभु श्री राम का मंदिर का निर्माण पूर्ण होने पर धर्म ध्वजा का ध्वजारोहण होने पर पर सभी राम भक्तों को शुभकामनाएं और बधाइयां देकर कार्यक्रमों को सफल बनाया। मुख्य कार्यक्रम प्राचीन हनुमान मंदिर पान दरीबा पर राष्ट्रीय पुजारी परिषद के संस्थापक श्याम कृष्ण रस्तौगी, पंडित प्रवीन शर्मा, पंडित कार्तिक शर्मा पंडित सुबोध शर्मा के नेतृत्व मे महाकालेश्वर बालाजी धाम सम्राट अशोक नगर पर पर महानगर संत महामंडलेश्वर स्वामी संजयनंद गिरी जी महाराज सेवक आराधना अग्रवाल के नेतृत्व में, माता मंदिर लाइन पार पर पंडित नवल स्वरूप अवस्थी ,दिनेश सैनी पुजारी राजू सैनी के नेतृत्व में, सनातन धर्म मंदिर

राष्ट्र के गौरवशाली दिन को यादगार बना ने के लिए शहर के 101 मंदिरों पर सुन्दर काण्ड पाठ ,सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ, महाआरती एवं दीपोत्सवआदि कार्यक्रम शहर के अनेक मंदिरों पर भव्यता के साथ आयोजित कर सनातन धर्म में नया उत्साह भरा।

मिलन बिहार पर सावित्री शर्मा अर्पित शर्मा पंडित मयंक जोशी के नेतृत्व में श्री काली माता मंदिर लालबाग पर पर महंत स'जन गिरी जी महाराज पंडित काशीराम तिवारी पंडित विशाल शर्मा के नेतृत्व में श्री काली माता मंदिर देहरी गांव पर महंत राघव दास जी ,पुजारी महेंद्र के नेतृत्व में, ऋणमुक्तेश्वर मन्दिर मधुर कॉलोनी पीतल बस्ती पर पर पुजारी भारत जी पंडित विनोद शर्मा के नेतृत्व में, श्री राम गंगा गौशाला कानून गोयन पर आचार्य पंडित विनीत शर्मा अनुज राजपूत के नेतृत्व में ,श्री बालाजी दरबार होली का मैदान कटघर पर साध्वी राघवेंद्री जी महाराज पंडित प्रदीप ओझा के नेतृत्व में, शिव मंदिर पटपट सराय पर पंडित तेज नारायण मिश्रा एवं आचार्य कामेश्वर मिश्रा के नेतृत्व में,सीता राम मंदिर मौहल्ला गुजराती पर पंडित हरि कृष्ण दुबे पंडित सतीश चंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में ,चौरासी घन्टा मन्दिर दीवान का बाजार पर पंडित आशीष शर्मा के नेतृत्व में,श्री शिव रामगंगा मंदिर घाट अटल घाट पर पंडित मनमोहन शर्मा पंडित अमन शर्मा के नेतृत्व में शक्ति लोक शिवालय लोको सेट पर पंडित सतीश खंडूरी पंडित शिवकुमार के नेतृत्व में, नारायण मंदिर लाजपत नगर पर पुजारी प्रदीक शर्मा आचार्य मुकुल शास्त्री कें नेतृत्व में, शिव दुर्गा मंदिर कंजीरी सराय पर पंडित रमेश चंद शर्मा के नेतृत्व में, मेहंदीपुर बालाजी धाम राफतपुरा पर महंत राजू दास जी के नेतृत्व में, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ महा आरती एवं प्रसाद वितरण प्रभु श्री राम के मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर हुए ध्वजारोहण कार्यक्रम बधाई और शुभकामनाएं सभी राम भक्तों को दी गई।

डीएम के हाथों सम्मानित हुए 24 बीएलओ

मुरादाबाद।

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में चलाए जा रहे विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 24 बीएलओ को जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अनुज सिंह ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में सम्मानित किया। जिलाधिकारी द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाले बीएलओ में तहसील सदर के पवन शर्मा, विवेक कुमार, पूनम वर्मा, रश्मि सिंह, तहसील कांठ के मो. परवेज, गायत्री देवी, सीमा रानी, कपिल कुमार, तहसील बिलारी के आनंद कुमार, निशांत सिंह, गीता, भगत सिंह, जगवीर सिंह, कावेरी शर्मा, सुनीता रानी, साधना सागर, भूरे सिंह, जूबी, मो. जुम्मा खान, तहसील ठाकुरद्वारा के प्रेमपाल सिंह, संजय कुमार, हेमवीर सिंह, पूजा रानी और शहनाज जहां शामिल हैं। जिलाधिकारी ने इन सभी बीएलओ को उपहार और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया। उन्होंने कहा कि इन सभी बीएलओ द्वारा विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में सक्रियता पूर्वक शतप्रतिशत कार्य पूर्ण करना अत्यंत सराहनीय है। उनके द्वारा किए गए यह कार्य अन्य बीएलओ को भी प्रोत्साहित करेंगे।

अछा कार्य करने पर मिले प्रशस्ति पत्र

जिलाधिकारी ने कहा कि बीएलओ प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्य को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने के दौरान आयोग के निर्देशों का विशेष ध्यान रखें तथा निर्धारित मानकों के अनुरूप पूरी पारदर्शी प्रक्रिया को अपनाते हुए पुनरीक्षण कार्य को संपन्न कराएं।

मां और बाप अनमोल नेअमत हैं- अल्लामा जाबिर हुसैन सिद्दीक़ी

हजारीबाग़ ।

पगमल, हनीफ़ कॉलोनी, हजारीबाग़ स्थित मोहम्मद रियाज़ के आवास पर एक महान सभा को संबोधित करते हुए खुसूसी मुक़र्रिर प्रसिद्ध इस्लामिक स्कॉलर अल्लामा जाबिर हुसैन सिद्दीक़ी ने फरमाया कि- हमारे घरों के नौजवान लड़कों का हाल यह हो गया है, कि जिनके पालने और पढ़ाने, लिखाने में मां-बाप अपनी पूरी जिंदगी ख़त्म कर देते हैं। अपने बेटे को उम्दा से उम्दा स्कूल और कॉलेज जैसे- पुणे और कोटा, दिल्ली और मुंबई जैसी जगहों पर भेज कर, उन्हें अछी शिक्षा दिलाने के लिए वह अपनी प्रॉपर्टी, अपनी जायदाद सब कुछ बेच देते हैं। मगर, जब उनकी शादियां बहुत तमन्नाओं के बाद करते हैं, तो वही बचे जवान होने के बाद, अपनी मां और अपने बाप से कहते हैं, कि आपने हमारे लिए किया ही क्या है? और उनकी सारी कुर्बानियां वह भूल जाते हैं। मां-बाप की क़द्र नहीं करते हैं। बीवी के दामन में आने के बाद, मां-बाप की खुशियों का खयाल नहीं रखते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि, हमें अपने घर में बूढ़े मां-बाप की ख़िदमत में अपना पूरा वक्त देना चाहिए।

उनकी ख़िदमात के लिए, एक पैर पर खड़े रहना चाहिए। जो एक सपूत होने की पहचान है।

सभा में हजारीबाग़ शहर के काफ़ी लोगों ने शिरकत की। सभा में क़ारी कमाल अहमद रिज़वी, क़ारी अब्दुल लतीफ़ क़ादरी, हाफ़िज़ मोहम्मद असग़र, हाफ़िज़ मोहम्मद अफ़ज़ल और गुलशन ए मुस्तफ़ा के तलबा समेत मोहल्ले के काफ़ी लोगों ने भाग लिया। अंत में सलातो सलाम के बाद अल्लामा जाबिर हुसैन सिद्दीक़ी की दुआ पर सभा समाप्त की गई, और रियाज़ खान ने आने वाले मेहमानों का शुक्रिया के साथ उन्हें विदा किया।

साइकिल रैली में गूंजे देश भक्ति के गीत

मुरादाबाद।

23 यूपी बटालियन एनसीसी की सब यूनिट महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज के एनसीसी कैडेटों द्वारा एनसीसी दिवस के उपलक्ष में एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया। एनसीसी कैडेटों ने रैली प्रारंभ करने से पहले देश धर्म के वास्ते बलिदान होने वाले गुरु तेग बहादुर जी के 350 वें शहादत दिवस पर उन्हें नमन करते हुए उनके चित्र के समक्ष अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही भारतीय सिनेमा जगत की एक बेहतरीन हस्ती धर्मेंद्र को उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर कंपनी कमांडर मेजर राजीव ढल ने बताया कि एनसीसी दिवस प्रत्येक वर्ष के नवंबर माह के चौथे रविवार को मनाया जाता है। इस उपलक्ष में एनसीसी कैडेटों के द्वारा साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली के दौरान एनसीसी

कैडेट भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाते हुए चल रहे थे। यह साइकिल रैली महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज मुरादाबाद से प्रारंभ होकर ग्रीन मिडोज स्कूल,अटल पथ पर होती हुई पुलिस लाइन के गेट के आगे से जिगर कॉलोनी, चक्कर की मिलक होती हुई वापस महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज मुरादाबाद पर समाप्त हुई । इस साइकिल रैली के दौरान एनसीसी कैडेट अपने साइकिलों पर भारत की आन बान शान राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लगा कर चल रहे थे। इस रैली के माध्यम से एनसीसी की बढ़ती लोकप्रियता को और जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया और साइकिल रैली बढ़ते प्रदूषण के दौर में पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश देती है कि हमें पेट्रोल व डीजल से चलने वाले वाहनों का कम प्रयोग करें और हो सके तो आसपास जाना हो तो साइकिल का प्रयोग करें साइकिल चलाने से अपना शरीर भी स्वस्थ रहेगा और पर्यावरण का संरक्षण भी होगा । मेजर राजीव ने आगे कहा कि इस मौके पर रैली प्रारंभ करने से पहले एनसीसी कैडेटों को गुरु तेग बहादुर जी का इतिहास बताया गया कि किस प्रकार उन्होंने देश व धर्म के लिए अपना स्वयं का बलिदान दिया अपने अपने परिवार को भी इस देश धर्म के वास्ते बलिदान कर दिया। हमें उनकी शहादत को नहीं भूलना चाहिए जो भी कार्य करें राष्ट्र के लिए करना चाहिए । इस मौके पर मेजर राजीव ढल, फैजान, विशेष कुमार, अमन, फैजान, विशेष कुमार, अमन वर्मा, मोनू, अर्पित कांत,सिद्धार्थ,सुमित कुमार, अनुज,कृष्ण शर्मा, अंकित, भव्य बंसल सहित बड़ी संख्या में एनसीसी कैडेट उपस्थित रहे।

एनसीसी दिवस पर निकली रैली

सड़क हादसे में दैनिक जागरण के प्रतिनिधि की मौत, एक घायल, गांव में शोक की लहर

मेजा प्रयागराज। प्रयागराज-गोरखपुर हाईवे पर गंगापार के फूलपुर इलाके में सोमवार देर रात दर्दनाक हादसा हुआ। बल्कर वाहन (सीमेंट की राख ले जाने वाला वाहन) की टक्कर से बाइक सवार दैनिक जागरण के रामनगर

प्रतिनिधि नरेश द्विवेदी पुत्र स्व. देवी शंकर द्विवेदी की मौत हो गई। हादसे में बाइक पर सवार बैजनाथ कनौजिया गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें शहर के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।फूलपुर क्षेत्र स्थित प्रयागराज जनपद की अंतिम सीमा पर बुढ़िया का इनारा बाजार में देर रात हादसा हुआ। बताया जाता है कि पीछे से आ रहे तेज रफ्तार बल्कर वाहन ने बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार नरेश द्विवेदी की मौके पर ही मौत हो गई तथा बाइक चला रहे बैजनाथ कनौजिया गंभीर रूप से घायल हो गए। नरेश द्विवेदी मेजा थाना क्षेत्र के पकरी सेवार के रहने वाले थे। बताया जाता है कि सोमवार को सोरांव - पांती गांव निवासी श्याम नारायण शुक्ल के पुत्र के वैवाहिक समारोह में शामिल होने के लिए बैजनाथ कनौजिया के साथ जौनपुर जनपद गए थे। जहां से रात में घर वापस लौटते समय फूलपुर में हादसे के शिकार हुए। कोतवाली पुलिस ने शव कब्जे में लिया। वहीं गंभीर रूप से घायल बैजनाथ प्रसाद को इलाज के लिए सीएचसी फूलपुर ले गई। वहां चिकित्सकों ने हालत गंभीर होने के कारण प्रयागराज रेफर कर दिया। दुर्घटना के बाद बल्कर वाहन चालक घटना से थोड़ी दूर वाहन छोड़कर फरार हो गया। स्थानीय लोगों के अनुसार बैजनाथ के वाहन में फंस जाने के कारण बल्कर उन्हें लगभग 50 मीटर से अधिक दूर तक घसीटते हुए ले गया था। नरेश द्विवेदी के एक पुत्र और एक पुत्री है। हृदय विदारक इस घटना को लेकर समूचे गांव में शोक की लहर व्याप्त है।

हिरासत में हिंसा और मौत सिस्टम पर धब्बा, शीर्ष कोर्ट की सख्त टिप्पणी- देश नहीं करेगा बर्दाश्त

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि पुलिस हिरासत में हिंसा और मौतें हमारी व्यवस्था पर एक बड़ा दाग हैं और देश अब इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगा। सुप्रीम कोर्ट एक मामले का स्वत संज्ञान लेते हुए सुनवाई कर रहा है, जो देशभर के पुलिस थानों में सीसीटीवी के ठीक से न चलने से जुड़ा है। अदालत ने इस दौरान राजस्थान में आठ महीनों में 11 हिरासत मौतों पर गहरी चिंता जताई। दो जजों की बेंच न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता ने मामले में कहा, देश अब ऐसी घटनाओं को बर्दाश्त नहीं करेगा। यह सिस्टम पर धब्बा है। हिरासत में मौतें नहीं हो सकतीं। वहीं सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि हिरासत में मौत को कोई भी व्यक्ति सही नहीं ठहरा सकता। लेकिन कोर्ट इस बात से नाराज हुआ कि केंद्र सरकार ने अब तक अपना अनुपालन रिपोर्ट दाखिल नहीं किया है। अदालत ने इस पर तीखा सवाल किया और पूछा केंद्र सरकार इस अदालत को हल्के में क्यों ले रही है? इसके बाद केंद्र ने तीन हफ्ते के भीतर हलफनामा देने का वादा किया। सुप्रीम कोर्ट ने 2018 और 2020 में आदेश दिया था कि, सभी पुलिस थानों, सीबीआई, ईडी, एनआईए जैसी केंद्रीय एजेंसियों के दफ्तरों में फुल कवरेज वाले सीसीटीवी कैमरे और रिकॉर्डिंग सिस्टम लगाए। लेकिन कोर्ट को बताया गया कि, केवल 11 राज्यों ने ही अब तक अपनी रिपोर्ट दाखिल की है। कई

राज्य और केंद्र के कई विभागों ने अब तक कोई जानकारी नहीं दी। तीन केंद्रीय एजेंसियों में सीसीटीवी लग चुके हैं, लेकिन बाकी अभी भी पीछे हैं। वहीं शीर्ष कोर्ट ने कहा कि मध्य प्रदेश ने बेहद अच्छा काम किया है, हर पुलिस स्टेशन और चौकी को डिस्ट्रिक्ट कंट्रोल रूम से लाइव जोड़ा गया है। इसे बेंच ने काबिल-ए-तारीफ बताया।मामले की सुनवाई के दौरान बातचीत में अमेरिका के मॉडल का जिक्र आया, वहां सीसीटीवी की लाइव स्ट्रीमिंग भी होती है और कुछ निजी जेलें भी हैं। सॉलिसिटर जनरल ने कोर्ट को बताया कि कुछ समय पहले एक सुझाव आया था कि सीएसआर फंड से प्राइवेट जेल बनाई जाएं। इस पर कोर्ट ने कहा कि वह पहले से ही ओपन एयर प्रिजन मॉडल पर एक केस देख रहा है, जो भीड़भाड़ की समस्या, जेलों में हिंसा जैसे मुद्दों को कम कर सकता है। कोर्ट ने आदेश दिया, जो राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अभी तक रिपोर्ट नहीं दे पाए हैं, उन्हें तीन हफ्तों में हर हाल में अपनी जानकारी देनी होगी। अगर रिपोर्ट नहीं दी गई, तो उन राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के गृह विभाग के प्रमुख सचिव को कोर्ट में पेश होना पड़ेगा। केंद्र से कोर्ट ने कहा कि यदि केंद्रीय एजेंसियों ने पालन नहीं किया तो उनके निदेशक को बुलाया जाएगा।

कोर्ट ने पूरे मामले को 16 दिसंबर के लिए सूचीबद्ध किया है। तब तक सभी राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्र को अपनी-अपनी रिपोर्ट हर हाल में जमा करनी होगी।

राम मंदिर के शिखर पर फहरी धर्म ध्वजा

गुलामी की मानसिकता ने रामत्व को नकारा- पीएम मोदी

अयोध्या।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने मंगलवार को अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के 191 फुट ऊंचे शिखर पर औपचारिक रूप से भगवा ध्वज फहराया, जो मंदिर निर्माण के पूरा होने का प्रतीक है। इस समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बन रही है। आज संपूर्ण भारत, संपूर्ण विश्व राममय है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार, अलौकिक आनंद है। मोदी ने कहा कि सदियों के घाव भर रहे हैं। सदियों की वेदना आज विराम पा रही है। सदियों का संकल्प आज सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। आज उस यज्ञ की पूर्णाहुति है, जिसकी अग्नि 500 वर्ष तक प्रज्वलित रही। जो यज्ञ एक पल भी आस्था से डिगा नहीं, एक पल भी विश्वास से टूटा नहीं। उन्होंने कहा कि आज भगवान श्रीराम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा, श्रीराम परिवार का दिव्य प्रताप, इस धर्मध्वजा के रूप में इस दिव्यतम, भव्यतम मंदिर में प्रतिष्ठापित हुआ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह धर्म ध्वज संकल्प का प्रतीक है। यह धर्म ध्वज संघर्ष से उत्पन्न विजय की गाथा है। यह धर्म ध्वज सदियों से संजोए गए स्वप्न का साकार रूप है। यह संतों की भक्ति और समाज की सामूहिक भागीदारी का पावन परिणाम है। आने वाली सदियों और सहस्राब्दियों तक, यह धर्म ध्वज भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करता रहेगा। ये धर्मध्वजा केवल एक ध्वजा नहीं, ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका भगवा रंग, इसपर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित शब्द और अंकित कोविदार वृक्ष रामराज्य की कीर्ति को प्रतिरूपित करता है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये ध्वज...संकल्प है, सफलता है! ये ध्वज...संघर्ष से सृजन की गाथा है, सदियों से चले आ रहे स्वप्नों का साकार स्वरूप है। ये ध्वज...संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है। उन्होंने कहा कि ये धर्मध्वज प्रेरणा बनेगा कि प्राण जाए, पर वचन न जाए अर्थात जो कहा जाए, वही किया जाए। ये धर्मध्वज संदेश देगा - कर्मप्रधान विश्व रचि राखा अर्थात विश्व में कर्म और कर्तव्य की प्रधानता हो। ये धर्मध्वज कामना करेगा - बैर न बिग्रह आस न त्रासा, सुखमय ताहि सदा सब आसा यानी भेदभाव, पीड़ा, परेशानी से मुक्ति और समाज में शांति एवं सुख हो।

राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण 'एक नए युग की शुरुआत' है : योगी आदित्यनाथ

अयोध्या। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अयोध्या में राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण कोएक नए युग की शुरुआत बताया। उन्होंने इस कार्यक्रम में मौजूद रहने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत तथा उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल का धन्यवाद किया। आगंतुकों को संबोधित करते हुए, आदित्यनाथ ने कहा कि भगवान राम का भव्य मंदिर 140 करोड़ भारतीयों कीआस्था, सम्मान और आत्म-गौरव का प्रतीक है। उन्होंने इसके निर्माण में योगदान देने वाले सभीकर्मयोगियों का दिल से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह दिन ''उन संतों, योद्धाओं और राम भक्तों कीअटूट भक्ति को समर्पित है जिन्होंने इस आंदोलन और लंबे संघर्ष के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, जिसका नतीजा मंदिर के निर्माण के रूप में सामने आया।'' आदित्यनाथ ने कहा कि जब 2014 में प्रधानमंत्री के रूप में मोदी ने देश का नेतृत्व संभाला था, तो लाखों लोगों के दिलों मेंसंकल्प और विश्वास का सूरज जगा।

उन्होंने कहा,आज, वह संकल्प इस भव्य राम मंदिर के रूप में सभी भारतीयों और भक्तों के सामने पूरा हुआ है। उन्होंने कहा कि राम मंदिर के ऊपर फहरा रहा ध्वज सच्चाई, न्याय, गरिमा और राष्ट्रीय धर्म का प्रतीक है। आदित्यनाथ ने कहा,यह एक विकसित भारत के दृष्टिकोण को भी दिखाता है, क्योंकि संकल्प का कोई विकल्प नहीं है, और पिछले 11 सालों में हम सभी ने एक बदलते भारत को देखा है। हम एक ऐसा भारत देख रहे हैं जहां विरासत और विकास पूरे तालमेल के साथ मौजूद है, जो देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। उन्होंने राम मंदिर आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि अटूट विश्वास बना रहा, और जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेतृत्व में संघर्ष शुरू हुआ, तो पूरे आंदोलन में एक ही संकल्प गूंजा-रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे- लाठी-गोली खाएंगे, पर मंदिर वहीं बनाएंगे। आदित्यनाथ ने कहा कि एक समय था जब अयोध्या को नजरअंदाज किया जाता था और यहां अव्यवस्था थी, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, यह अन्तर्राष्ट्रिक आध्यात्मिक राजधानी में बदल गया है।

-: मुख्यमंत्री ममता का भाजपा पर तीखा प्रहार :-

मुझे हराने का दम नहीं, चुनाव आयोग अब बीजेपी कमीशन

मुझ पर चोट की तो पूरे भारत में बीजेपी की नींव हिला दूंगी... बंगाल में एसआईआर पर ममता की खुली ललकार

बंगाल। विधानसभा चुनाव अभी कुछ महीने दूर हैं। उससे पहले बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर सियासत गरमा गई है। इसी माहौल में मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बोंगांव में एक सभा की। एसआईआर विरोधी रैली में ममता ने कहा कि भाजपा राजनीतिक रूप से मेरा मुकाबला नहीं कर सकती और न ही मुझे हरा सकती है। उन्होंने कहा कि 'इलेक्शन कमीशन' अब एक निष्पक्ष संस्था नहीं रह गई है, यह 'बीजेपी कमीशन' बन गई है। बनर्जी ने सवाल किया कि क्या भाजपा शासित राज्यों में एसआईआर का आयोजन यह दर्शाता है कि केंद्र सरकार स्वीकार करती है कि वहां घुसपैठिया मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि मैं बीरभूम में पैदा हुई, वरना मुझे भी बांग्लादेशी कहते। अपने भाषण की शुरुआत में ममता ने हेलीकॉप्टर को लेकर भाजपा पर हमला बोला। उन्होंने कहा,मैं हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल नहीं करती। मैं कार से चलती हूं। राज्य सरकार के पास एक हेलीकॉप्टर है। वह किराए पर है। मुझे सुबह 10 बजे यहां आना था। सुबह अचानक पता चला कि हेलीकॉप्टर नहीं जाएगा। चुनाव से पहले ही झगड़ा शुरू हो गया था। लेकिन मेरे लिए यह अच्छा रहा। रास्ते में कई जगह घूमा। लोगों से बातें कीं। उन्होंने दावा किया कि मैंने भाजपा से कहा कि मैं जो खेल खेलूंगी, उसमें मुझे कोई छू नहीं सकता। गलियों में घूमने से मेरा संपर्क और भी लोगों से हुआ है। एसआईआर के बारे में उन्होंने कहा कि एसआईआर कराने में तीन साल लगते हैं। 2002 में भी यही हुआ था। हमने कहा था कि कोई भी वैध मतदाता छूटेगा नहीं। अब नियम बदल रहे हैं। आयोग तय कर रहा है कि सरकार में कौन बैठेगा। चुनाव आयोग को निष्पक्ष होना चाहिए। पहले मुझे आधार कार्ड मिला था। वहां सबने पैसे खर्च किए। मुझे भी पैसे खर्च करने पड़े। मेरा आधा घंटा बर्बाद हो गया।

-: बिहार में नई सरकार का पहला कदम :-

1 दिसंबर से विधानसभा सत्र, नव-निर्वाचित सदस्य लेंगे शपथ, 1 करोड़ नौकरियों का वादा

पटना। बिहार विधानसभा के नवनिर्वाचित सदस्यों को अगले सप्ताह इसके उद्घाटन सत्र के दौरान शपथ दिलाए जाने की संभावना है। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि इस आशय का एक प्रस्ताव नीतीश कुमार मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है और इसे राज्यपाल के पास अनुमोदन के लिए भेज दिया गया है। सूत्रों के अनुसार, पांच दिवसीय सत्र 1 दिसंबर से शुरू होने की संभावना है और नवनिर्वाचित सदस्यों को प्रोटेम स्पीकर नरेंद्र नारायण यादव पद की शपथ दिलाएंगे।

जदयू के वरिष्ठ नेता और कई बार विधायक रहे यादव को सोमवार को राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया। वह उपसभापति और मंत्री भी रह चुके हैं। नवनिर्वाचित सदस्यों के शपथ ग्रहण के अलावा, आगामी सत्र के दौरान नए अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव होने की संभावना है। बिहार विधानसभा चुनाव जीतने के बाद मंगलवार को नीतीश कुमार मंत्रिमंडल की पहली बैठक हुई। मंत्रिमंडल ने अगले पांच वर्षों में राज्य के युवाओं को एक करोड़ नौकरियां देने का निर्णय लिया और राज्य को पूर्वी भारत का तकनीकी केंद्र बनाने का संकल्प लिया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक के बाद बिहार के मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने संवाददाताओं को संबोधित किया। सचिव ने बताया कि बैठक के दौरान मुख्य चर्चा के बिंदु व्यापक रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास थे। उन्होंने कहा कि बिहार को पूर्वी भारत का तकनीकी केंद्र बनाने के लिए एक रक्षा गलियारा, सेमीकंडक्टर विनिर्माण पार्क, वैश्विक क्षमता केंद्र, मेगा टेक सिटी और फिटनेस सिटी की स्थापना की जाएगी। अमृत ने कहा कि नए जमाने की अर्थव्यवस्था के तहत, बिहार कोअगले पांच वर्षों में एक बैक-एंड हब और वैश्विक कार्यस्थल के रूप में विकसित किया जाएगा।

क्या मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च पर भी फहराएंगे झंडा? राशिद अल्वी ने राम मंदिर पर पीएम मोदी को घेरा

नई दिल्ली।

कांग्रेस के पूर्व सांसद राशिद अल्वी ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर पर भगवा झंडा फहराने पर सवाल उठाया और पूछा कि क्या वह ऐसा मस्जिद, गुरुद्वारा या चर्च पर करेंगे। एएनआई से बात करते हुए, अल्वी ने प्रधानमंत्री मोदी पर 2027 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों से पहले राम मंदिर मुद्दे का राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने का आरोप लगाया और उन्हें भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से धर्मनिरपेक्षता के बारे में सीखने को कहा। कांग्रेस नेता ने कहा कि संविधान के अनुसार इस देश का कोई धर्म नहीं है, फिर प्रधानमंत्री यह झंडा क्यों फहराना चाहते हैं? क्या वह मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च पर झंडा फहराएंगे? वह राजनीतिक लाभ के लिए राम मंदिर पर झंडा फहराना चाहते हैं, ताकि देश में धार्मिक भावनाएं भड़काकर उत्तर प्रदेश चुनाव में उन्हें फायदा हो सके... उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू से धर्मनिरपेक्षता सीखनी चाहिए। यह बात प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत द्वारा आज अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के 191 फुट ऊंचे शिखर पर औपचारिक रूप से भगवा ध्वज फहराने के बाद आई है, जो मंदिर निर्माण के पूरा होने का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री ने किया पाञ्चजन्य शंख स्मारक का उद्घाटन

कुरुक्षेत्र।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हरियाणा के कुरुक्षेत्र में भगवान कृष्ण के पवित्र शंख के सम्मान में निर्मित पांचजन्य का उद्घाटन किया। उनके साथ हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी थे। इसके बाद, प्रधानमंत्री मोदी ने महाभारत अनुभव केंद्र का दौरा किया, जो एक गहन अनुभवात्मक केंद्र है, जिसमें महाभारत के महत्वपूर्ण प्रसंगों को दर्शाने वाली कलाकृतियां हैं, जो इसके स्थायी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालती हैं। प्रधानमंत्री मोदी नौवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में भी भाग लेंगे। एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री पूज्य गुरु के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष सिक्का और स्मारक डाक टिकट जारी करेंगे। इस अवसर पर वे उपस्थित जनसमूह को भी संबोधित करेंगे। गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में, भारत सरकार एक वर्ष तक चलने वाला स्मरणोत्सव मना रही है। शाम लगभग 5:45 बजे, प्रधानमंत्री भारत के सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक, ब्रह्म सरोवर में दर्शन और पूजा की, जिसे श्रीमद्भगवद्गीता के दिव्य प्रकटीकरण से जुड़ा माना जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, नवाया शीश

गुरु तेग बहादुर ने धर्म की रक्षा के लिए दी अपनी जान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कुरुक्षेत्र में सिख इतिहास के महान संत-योद्धा, हिंद दी चादर श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने गुरु महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित किए और शीश नवाया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि कुरुक्षेत्र की पावन भूमि सिख परंपरा और आस्था से गहराई से जुड़ी हुई है। यहां सभी दस सिख गुरु अपनी यात्राओं के दौरान पधारे हैं, जिससे यह धरती सिख धर्म के लिए विशेष महत्व रखती है। श्री मोदी ने गुरु तेग बहादुर जी के जीवन को प्रेरणा का स्रोत बताते हुए कहा, -गुरु साहिब वीरता, करुणा और धर्म रक्षा की जीवंत मिसाल हैं। उस काले दौर में जब मुगल शासक औरंगजेब के आदेश पर कश्मीरी पंडितों का जबरन धर्मांतरण कराया जा रहा था, तब पीड़ित कश्मीरी हिंदुओं का एक दल आनंदपुर साहिब पहुंचा और गुरु महाराज से रक्षा की गुहार लगाई। गुरु तेग बहादुर जी ने न केवल उनकी रक्षा का बीड़ा उठाया, बल्कि स्वयं दिल्ली जाकर धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। 'हिंद दी चादर' कहलाने वाले गुरु साहिब ने सिद्ध कर दिया कि दूसरों के धर्म की रक्षा करना भी परम धर्म है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरियाणा में श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के पावन अवसर पर गुरु महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शीश नवाया। इस दौरान मंच पर गुरबाणी का भावपूर्ण आयोजन किया गया, जिसमें रागियों ने गुरु तेग बहादुर जी के जीवन, त्याग और बलिदान को समर्पित शबदों का सुंदर कीर्तन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं ने गुरु महाराज के प्रति अपनी आस्था और कृतज्ञता व्यक्त की। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने गुरु तेग बहादुर जी के अद्वितीय बलिदान और मानवता की रक्षा के लिए दिए गए सर्वोच्च त्याग को नमन करते हुए देशवासियों को भी उनकी शिक्षाओं पर चलने का संदेश दिया।

गुरु तेज बहादुर का बलिदान मानवाता के लिए प्रेरणादायक : सीएम सैनी

"सीएम सैनी ने कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में आयोजित होने वाले 350वें शहीदी दिवस समागम के दौरान गुरु जी के बलिदान को समस्त मानवता के लिए प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि यह कुर्बानी केवल एक समुदाय या क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत को जीवंत करने वाली थी।